



नामांकन के आखियी दिन सियासत का तूफान, कहीं उम्मीदों की जीत तो कहीं आंसुओं में डूबे सपने, महाराष्ट्र की नगर राजनीति में दिए अभूतपूर्व द्रामा

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र की 29 महानगरपालिकाओं के लिए नामांकन के अंतिम दिन ने राज्य की सियासत को पूरी तरह गरमा दिया। यह दिन केवल पर्याप्त भरने की औपचारिक प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें उम्मीदें, आंशु, नाराजगी, शक्ति प्रदर्शन और अंदरूनी राजनीतिक खींचतान खुलकर सामने आई। कहीं ढोल-नगाड़े और समर्थकों की भीड़ के साथ उम्मीदवारों ने नामांकन भरा, तो कहीं टिकट करने की खबर ने वर्षों की निष्ठा को एक झटके में तोड़ दिया। इस पूरे घटनाक्रम ने यह साफ कर दिया कि शहरी निकाय चुनाव अब सिर्फ स्थानीय मुद्दों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सीधे-सीधे राज्य की बड़ी राजनीति की दिशा तय करने वाले बनते जा रहे हैं। नामांकन की अंतिम तिथि तक सत्ताधरी महायुति और विपक्षी महाविकास अधाड़ी दोनों ही खेमों में सीट बंटवारे को लेकर बेचैनी बनी रही। दिनभर बैठकों का

दौर चलता रहा, फोन कॉल्स और बंद कर्मरों में रणनीतियां बनती-बिगड़ती रहीं। कई जगहों पर जहां गठबंधन की बातें से तस्वीर साफ होती दिखी, वहीं कई महानगरपालिकाओं में आपसी सहमति नहीं बन सकी। इसका नतीजा यह हुआ कि महाराष्ट्र की 14 महानगरपालिकाओं में बीजेपी और शिंदे गुट की शिवसेना आमने-सामने चुनावी मैदान में उतर गईं। यह स्थिति साफ संकेत देती है कि सत्ता में साथ होने के बावजूद जर्मानी राजनीति में दोनों दलों के बीच खींचतान कम नहीं हुई है।

स्थानीय समीकरणों ने इस चुनाव में केंद्रीय नेतृत्व की रणनीति को भी कई जगह पीछे धकेल दिया। कुछ शहरों में बीजेपी ने एनसीपी के साथ तालमेल बैठाया, तो कहीं शिंदे सेना और एनसीपी ने साथ मिलकर चुनाव लड़ने का फैसला किया। इससे यह संदेश भी गया कि इस बार एक जैसी नीति परे राज्य में लागू

कोशिशों के बावजूद सहमति नहीं बन सकी। शिवे गुट के मंत्री प्रताप सरनाईक ने बातचीत की कई कोशिशों कीं, लेकिन बात नहीं बनी। बीजेपी यहां अपनी एकतरफा जीत की उम्मीद के साथ अकेले दम पर चुनावी रण में उत्तरती दिखाई दे रही है। विपक्षी खेमे में भी नामांकन के अंतिम दिन राजनीतिक हलचल तेज रही। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के प्रमुख राज ठाकरे की उद्धव ठाकरे से मुलाकात ने राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं को और हवा दी। बांद्रा स्थित 'मातोश्री' में हुई इस मुलाकात को नगर निकाय चुनावों में सीट बंटवारे से जुड़ी आखिरी उलझानों को सुलझाने की कोशिश के तौर पर देखा गया। हालांकि अब तक यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका है कि बीएमसी में शिवसेना (यूबीटी), एन्सीपी (शरद पवार गुट) और एमएनएस के बीच अंतिम तौर पर सीटों का बंटवारा कैसे हुआ है, लेकिन संकेत मिल रहे हैं कि

द्वय गुट 150 से अधिक सीटों पर अपने अमीदवार उतारेगा, कुछ सीटें शरद वार गुट को और शेष एमएनएस को दी देंगी। कांग्रेस खेमे में भी नामांकन के अखिरी दिन असहज हालात देखने को लाये गये। मुंबई नगर निगम चुनाव के लिए कांग्रेस और वंचित बहुजन अद्वाडी के बीच घोषित गठबंधन जमीनी सच्चाई से कराता नजर आया। बीबीए के पास उसे वांटिट सीटों में से करीब 20 सीटों पर अमीदवार ही नहीं मिले। इससे कांग्रेस और रणनीति पर सवाल खड़े हो गए हैं। और माना जा रहा है कि आने वाले दिनों इस गठबंधन की दिशा पर फिर से थाने हो सकता है।

मार्मिकन के अंतिम दिन सबसे मार्मिक रूप स्थ उम्मीदवारों और नेताओं की विकितगत कहानियों में देखने को मिला। भारा-भायंदर में बीजेपी की पूर्व महिला विला अध्यक्ष वनिता बने को उस वक्त हरा झटका लगा, जब उन्हें पता चला

कि उनकी बेटी श्रद्धा बने का टिकट ऐन वक्त पर काट दिया गया है। यह सदमा इतना गहरा था कि वनिता बने को दिल का दोरा पड़ गया और उन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। पार्टी के भीतर टिकट वितरण की राजनीति का यह दृश्य पूरे इलाके में चर्चा का विषय बन गया।
मुंबई में उद्धव ठाकरे गुट की नेता माधुरी मांजरेकर की कहानी ने भी कई आंखें नम कर दीं। 35 वर्षों से पार्टी से जुड़ी रही माधुरी का टिकट कटने पर वह फूट-फूटकर रो पड़ीं। उन्होंने कहा कि जब पार्टी मुश्किल दौर से गुजर रही थी, तब उन्होंने अपने वार्ड में संगठन की मशाल जलाए रखी, लेकिन गठबंधन के दबाव में उनका वार्ड दूसरी पार्टी को दे दिया गया। उनकी पीड़ा ने निष्ठा और राजनीतिक समझौते के टकराव को उजागर कर दिया। जलगांव में शरद पवार गुट की इच्छक उम्मीदवार कलाबाई शिरसाठ ने टिकट न मिलने पर खुलकर नाराजगी जाहिर की और निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया। उनका आरोप था कि उन्हें जानबूझकर एवं फार्म नहीं दिया गया। इसी तरह सोलापुर और अन्य शहरों में भी टिकट कटने से नाराज नेताओं और कार्यकर्ताओं का गुस्सा सामने आया, कहीं घेराव हुआ तो कहीं खुली बगावत के सुर सुनाई दिए।
कुल मिलाकर नामांकन का अंतिम दिन महाराष्ट्र की नगर राजनीति के इतिहास में एक ऐसे दिन के रूप में दर्ज हो गया, जहां सियासत के हर रंग दिखाई दिए। कहीं उम्मीदों ने नए पंख लगाए, तो कहीं वर्षों की मेहनत आंसुओं में बह गई। गठबंधन, टूटन, बगावत और भावनाओं से भरे इस दिन ने यह साफ कर दिया कि आने वाले नगर निगम चुनाव सिर्फ स्थानीय सत्ता का सवाल नहीं होंगे, बल्कि वे महाराष्ट्र की राजनीति की दिशा तय करने वाले अहम मुकाबले साबित होंगे।

टिकट न मिलने पर खुलकर नाराजी जाहिर की और निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया। उनका आरोप था कि उन्हें जानबूझकर ऐसी फार्म नहीं दिया गया। इसी तरह सोलापुर और अन्य शहरों में भी टिकट कटने से नाराज नेताओं और कार्यकर्ताओं का गुस्सा सामने आया, कहीं घेराव हुआ तो कहीं खुली बगावत के सुर सुनाई दिए।

कुल मिलाकर नामांकन का अंतिम दिन महाराष्ट्र की नगर राजनीति के इतिहास में एक ऐसे दिन के रूप में दर्ज हो गया, जहां सियासत के हर रंग दिखाई दिए। कहीं उम्मीदों ने नए पंख लगाए, तो कहीं वर्षों की मेहनत आसुओं में बह गई। गठबंधन, टूटन, बगावत और भावनाओं से भरे इस दिन ने यह साफ कर दिया कि आने वाले नगर निगम चुनाव सिर्फ स्थानीय सत्ता का सवाल नहीं होंगे, बल्कि वे महाराष्ट्र की राजनीति की दिशा तय करने वाले अहम मुकाबले सावित होंगे।

घुसपैठ और सीमा सुरक्षा के मुद्दे पर गरजे अमित शाह, ममता सरकार को कटघरे में खड़ा कर बंगाल चुनावी रण का बिगल

(जीएनएस)। नई दिल्ली/कोलकाता। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बार फिर तीखा सियासी संदेश देते हुए घुसपैठ, बांग्लादेश सीमा पर फेंसिंग और राज्य की कानून-व्यवस्था को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सरकार पर सीधा और कठोर हमला बोला है। कोलकाता में मीडिया को संवेदित करते हुए अमित शाह ने जिस आक्रामक तेवर में बयान दिए, उससे यह साफ संकेत मिल गया कि भाजपा ने 2026 के विधानसभा चुनाव के लिए अपना चुनावी टेन और एजेंडा तय कर दिया है। शाह के भाषण में न केवल सीमा सुरक्षा और घुसपैठ का मुद्दा केंद्र में रहा, बल्कि भ्रष्टाचार, विकास में ठहराव और बंगाल की सांस्कृतिक पहचान को लेकर भी उन्होंने ममता सरकार को जिम्मेदार ठहराया। अमित शाह ने कहा कि केंद्र सरकार बांग्लादेश से सटी पश्चिम बंगाल की सीमा पर फेंसिंग का काम पूरी तरह करना चाहती है, लेकिन राज्य सरकार की ओर से जमीन उपलब्ध नहीं कराई जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि राजनीतिक लाभ के लिए ममता बनर्जी सरकार जानबूझकर बाढ़बंदी के काम में अड़चनें डाल रही है, ताकि अवैध घुसपैठ जारी रहे और उसका चुनावी प्रायत्त उत्तराय ज़ मरें। शाह ने दो टक्के शल्तों

विकास पूरी तरह ठप हो गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शूरू की गई जनकल्याणकारी योजनाएं भी पश्चिम बंगाल में 'टोल सिडिकेट' और भ्रष्ट तंत्र का शिकार हो रही हैं, जिससे आम जनता को उनका वास्तविक लाभ नहीं मिल पा रहा है।

अमित शाह ने पिछले 14 वर्षों के शासन को याद दिलाते हुए कहा कि इस दौरान पश्चिम बंगाल की पहचान डर, हिंसा और भ्रष्टाचार से जुड़ गई है। उन्होंने कहा कि राज्य में आम आदमी खुद को असुरक्षित महसूस करता है और राजनीतिक हिंसा एक सामान्य बात बन चुकी है। शाह ने यह भी कहा कि 15 अप्रैल 2026 के बाद, जब पश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार बनेगी, तब बंग गौरव और बंगाल की समृद्ध संस्कृतिक विरासत को फिर से जीवित किया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि भाजपा बंगाल की भाषा, संस्कृति और परंपरा की रक्षा करते हुए राज्य को विकास के नए रास्ते पर ले जाएगी।

अपने संबोधन में अमित शाह ने भाजपा के बहुते जनधर्म को ध्यानदृष्टि के जरूरी प्रतीक कहा।

पुष्पा, शब्दा द
(जीएनएस)। नई दिल्ली। हिंदी साहित्य की सशक्ति, निर्भीक और जमीनी आवाज मानी जाने वाली प्रसिद्ध कथाकार मैत्रेयी पुष्पा को वर्ष 2025 के इफ्को साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। देश की अग्रणी सहकारी संस्था इफ्को द्वारा यह सम्मान उन्हें उनके समग्र साहित्यिक योगदान, स्त्री विरास को नई दृष्टि देने और ग्रामीण समाज की यथार्थवादी अभिव्यक्ति के लिए प्रदान किया गया। इसी समारोह में युवा लेखिका अंकिता जैन को उनकी चर्चित पुस्तक 'ओह रे! किसान' के लिए इफ्को युवा साहित्य सम्मान से नवाजा गया। यह आयोजन नई दिल्ली स्थित कमानी सभागार में आयोजित हुआ, जहां साहित्य, कला और संस्कृति से जुड़ी अनेक विशिष्ट हस्तियों की उपस्थिति ने समारोह को गरिमा प्रदान की। समारोह में इफ्को के चेयरमैन दिलीप संघानी ने दोनों लेखिकाओं को सम्मानित करते हुए कहा कि साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला

लेखन दशकों से सामाजिक विसंगतियों, संघर्ष, ग्रामीण यथार्थ और मानवीय वेदनाओं को सशक्त स्वर देता रहा है। नकारात्मक साहित्य केवल पढ़ा नहीं जाता, बल्कि पाठक को भीतर तक झकझोरता है। वहीं अंकिता जैन की पुस्तक 'ओह रे! रुसान' को वर्तमान समय में किसानों के दृष्टि, संघर्ष और बदलती परिस्थितियों को वेदनशीलता के साथ सामने लाने वाला हृत्पूर्ण दस्तावेज बताया गया। अब अबसर पर मंच केवल सम्मान वितरण क सीमित नहीं रहा, बल्कि साहित्य और अमंच का सुंदर संगम भी देखने को मिला। त्रियो पुष्टा की चर्चित कहानी 'गुनहगार' और आधारित नाट्य प्रस्तुति ने दर्शकों को हरे भावनात्मक स्तर पर प्रभावित किया। चन के दौरान स्त्री की पीड़ा, समाज की जकड़न और आत्मसंघर्ष को जिस भावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया, सनेही पुष्टा के लेखन की ताकत को बढ़ावा देता है। इस प्रस्तुति को लंबे बार फिर रेखांकित कर दिया। सभागार मौजूद दर्शकों ने इस प्रस्तुति को लंबे

सम्मान ग्रहण करते हुए मैत्रेयी पुष्टा ने कहा कि साहित्य उनके लिए केवल लेखन नहीं, बल्कि जीवन को समझने और जीने की प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि गांव, स्त्री और हाशिए पर खड़ा समाज हमेशा उनके लेखन का केंद्र रहा है, क्योंकि वहीं से असली भारत की आवाज निकलती है। उन्होंने इफको जैसी संस्था द्वारा साहित्य को दिए जा रहे सम्मान को बेहद महत्वपूर्ण बताया और कहा कि जब सहकारी अंदोलन साहित्य के साथ जुड़ता है, तो उसकी सामाजिक सार्थकता और बढ़ जाती है। मैत्रेयी पुष्टा का जन्म 30 नवंबर 1944 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सिरुरी गांव में हुआ था। उनका बचपन झांसी जिले के खिल्ली गांव में बीता, जहां ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों, सामाजिक संरचनाओं और स्त्री की स्थिति को उन्होंने बहुत करीब से देखा। यही अनुभव आगे चलकर उनके लेखन की आत्मा बने। उनकी कहानियों और उपन्यासों में गांव सिर्फ पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवंत अपने लेखन के माध्यम से स्त्री को दया या सहानुभूति का पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। वहीं युवा लेखिका अंकिता जैन ने इफको युवा साहित्य सम्मान प्राप्त करते हुए कहा कि 'ओह रे! किसान' उनके लिए केवल एक किताब नहीं, बल्कि किसानों के जीवन से जुड़ा एक भावनात्मक अनुभव है। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक को लिखते समय उन्होंने खेतों, मंडियों और गांवों में जाकर किसानों से संवाद किया, उनकी पीड़ा को समझा और उसी सच्चाई को शब्दों में ढालने का प्रयास किया। उन्होंने इफको का आभार जताते हुए कहा कि यह सम्मान युवाओं को गंभीर और सरोकारपूर्ण लेखन के लिए प्रेरित करेगा। समारोह में उपस्थित साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने भी इफको की इस पहल की सराहना की। उनका कहना था कि ऐसे सम्मान न केवल स्थापित साहित्यकारों के योगदान को मान्यता देते हैं, बल्कि युवा लेखिकों को भी नई ऊर्जा और आत्मविश्वास

बंगाल के मुद्दों को लेकर अधीर रंजन की प्रधानमंत्री से मुलाकात
तंत्र विभिन्नों और राज्य सभा की सभा पर चर्चा की गई।

(जीएनएस)। नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी एक बार फिर राजनीतिक हल्कों में चर्चा का केंद्र बन गए हैं। मंगलवार को उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर पश्चिम बंगाल से जुड़े कई संवेदनशील और अहम मुद्दों को उनके समक्ष उठाया। इस मुलाकात में अधीर रंजन चौधरी ने खास तौर पर भाजपा शासित राज्यों में बांग्ला भाषी लोगों के साथ हो रहे कथित अत्याचार, उन्हें “धुसरैठिया” समझकर निशाना बनाए जाने की घटनाओं और मतुआ समुदाय की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने प्रधानमंत्री से इन मामलों में हस्तक्षेप करने और ठोस कदम उठाने का आग्रह किया, ताकि देश में सामाजिक सोहार्द और कानून-

A man with a mustache and glasses, wearing a patterned shirt, is speaking into a microphone. He is gesturing with his hands while speaking. The background is blue with some greenery. The text 'ए मतुआ समाज' is visible at the top in green.

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

The image displays two circular logos side-by-side. The logo on the left is for 'Jio TV+' and features a black circle with a red horizontal band across the middle. The text 'Jio' is in white on the left and 'tv+' is in white on the right. The logo on the right is for 'Jio Fiber' and features a white circle with a red horizontal band across the middle. The text 'Jio' is in white on the left and 'Fiber' is in blue on the right.

JioTV
CHENNAL NO.
2063



